

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 18-05-2016 ● अंक- 528 ● तारीख - 19 मई 2016, वैशाख शुक्ल -13 ● गुरुवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रुपया ● पृष्ठ-01



पवित्रता

जब तुम पवित्रता के ऐनकों को धारण करोगे तभी मेरे सत्य को समझ सकोगे, पवित्र वस्तुओं की पहचान पवित्र साधक ही कर सकते हैं।—श्री सत्य साईं बाबा

श्लोक

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्।।

अर्थात्:- अच्छे मित्रों का साथ बुद्धि की जड़ता को हर लेता है, वाणी में सत्य का संचार करता है, मान और उन्नति को बढ़ाता है और पाप से मुक्त करता है। चित्त को प्रसन्न करता है और (हमारी)कीर्ति को सभी दिशाओं में फैलाता है। (आप ही) कहें कि सत्संगति: मनुष्यों का कौन सा भला नहीं करती।

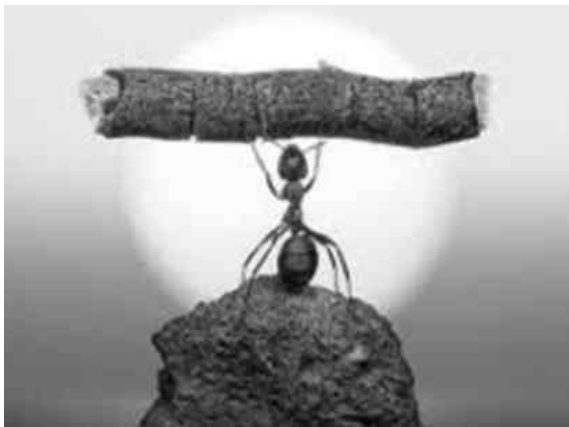
सकाम और निष्काम भक्ति में अन्तर

सकाम भक्ति केवल अपने स्वार्थ की दृष्टि से की जाती है, उसमें विश्व हित या दूसरों के साथ न्याय का विचार नहीं होता, निष्काम भक्ति विश्व हित वर्धन को ध्यान में रखकर की जाती है, उसमें स्वपरहित का समन्वय होता है, भक्ति में कोई कामना होने से ही वह सकाम-भक्ति नहीं हो जाती, कामना संकुचित या दूसरों के साथ अन्याय करने वाली हो, तभी वह सकाम भक्ति कहलायेगी, जो एक तरह की चापलूसी साभार- स्वामी सत्य भक्त जी

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

"आत्महत्या करना पाप है।"

मगर फिर भी आए दिन आप समाचार पढ़ते होंगे कि छात्र ने आत्महत्या कर ली, क्योंकि उसे परीक्षा में कम अंक मिले या फेल हो गया या फिर किसी ने आत्महत्या इसलिए कर ली, क्योंकि उसकी प्रेमिका ने उसे ठुकरा दिया या फिर किसी की अपने प्रेमी से शादी नहीं हो सकी। किसी ने बिजनेस में नुकसान होने से मौत को गले



लगा लिया। इस प्रकार के समाचार पढ़ने के बाद दिमाग में एक प्रश्न उठता है कि क्या जीवन के किसी मोड़ पर एक नाकामयाबी इतनी भारी होती है कि लोग आत्महत्या जैसा भयानक कदम उठा लेते हैं?

जीवन में सफलता और असफलता तो लगी ही रहती है, क्योंकि जिस प्रकार गाड़ी के दो पहिए होते हैं उसी प्रकार सफलता और असफलता भी जीवनरूपी गाड़ी के दो पहिए होते हैं। जीवन में बिना असफल हुए कोई आदमी कभी सफल नहीं हो सकता। लेकिन इससे घबराकर कोई भी आत्मघाती कदम उठाना गलत है। कई बार जिन पढ़े-लिखे युवाओं को मनचाहा रोजगार नहीं मिलता, वे निराशा से घिर जाते हैं और इनमें से कुछ आत्महत्या कर लेते हैं या करने का प्रयास करते हैं। ये लोग यह क्यों नहीं सोचते कि नौकरी पाना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। अगर नौकरी नहीं तो कोई व्यवसाय ही सही। किसी ने कहा भी है, 'जो मैंने चाहा, वह मुझे नहीं मिला, लेकिन जो मुझे मिला, वह तो मैंने चाहा ही नहीं था।'

हमें जिन्दगी में कई बार वह मिल जाता है, जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। महत्वपूर्ण है लगातार प्रयास करना और आत्मविश्वास रखना। परिणाम देर-सवेर जरूर मिलेगा। जीवन के कई बार हमें आशातीत सफलता नहीं मिल पाती है, लेकिन इससे घबराकर प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिए, बल्कि अपने प्रयासों में और तेजी लानी चाहिए।

क्या आप जानते हैं कि दुनिया में सबसे पहले बल्ब का आविष्कार करने वाले थॉमस एडिसन से जब 200 बार प्रयोग करने के बाद भी बल्ब नहीं बन सका तो लोगों ने उनका मजाक उड़ाना शुरू कर दिया और कहा कि तुम 200 बार कोशिश करने के बाद भी सफल नहीं हो सके। तब एडिसन ने जवाब दिया कि मैं 200 बार असफल नहीं हुआ बल्कि मैं ऐसे 200 तरीके जान गया जिनसे बल्ब नहीं बनाया जा सकता। तो केवल सोच का अंतर है। अगर आप अपनी असफलताओं में सफलता का रास्ता ढूँढ लेंगे तो जीवन में कभी असफल नहीं होंगे।

"परिणाम महत्वपूर्ण है, लेकिन उसके लिए किए गए प्रयास उससे भी अधिक महत्वपूर्ण हैं। लगातार प्रयास करते रहिए सफलता जरूर मिलेगी, क्योंकि कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।"

गम्भीर बीमारियों की 54 दवाएँ 55 फीसदी तक सस्ती

दवाओं के दाम तय करने वाली संस्था नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग अथॉरिटी ने कहा है कि गम्भीर बीमारियों जैसे कैंसर समेत अन्य बीमारियों डायबिटीज, हृदय रोग, उच्चरक्तचाप में काम आने वाली 54 दवाओं के दाम 55 फीसदी तक कम कर दिए गए हैं।

का उद्देश्य यही है कि अब जो भी दवाएं बाजार में आएँ, वे सस्ती रहें ताकि वे आम आदमी की पहुँच में बनी रहें। इस बारे में अधिसूचना जारी कर दी गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने दिसंबर में 875 में से उन 684 दवाओं के नाम शामिल किए थे जिनके बढ़ते दामों को कंट्रोल करना था। हालांकि अभी भी एनपीपीए को 280 दवाओं के दामों को फिर से निर्धारित



करना है ताकि गरीबों को अधिक से अधिक स्वास्थ्य लाभ मिल सकें। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण भारत में व्यक्ति की आय का 80 फीसदी और शहरों में 75 फीसदी दवाओं पर खर्च हो जाता है।

सबसे ऊपर है-परमात्म पुरुष



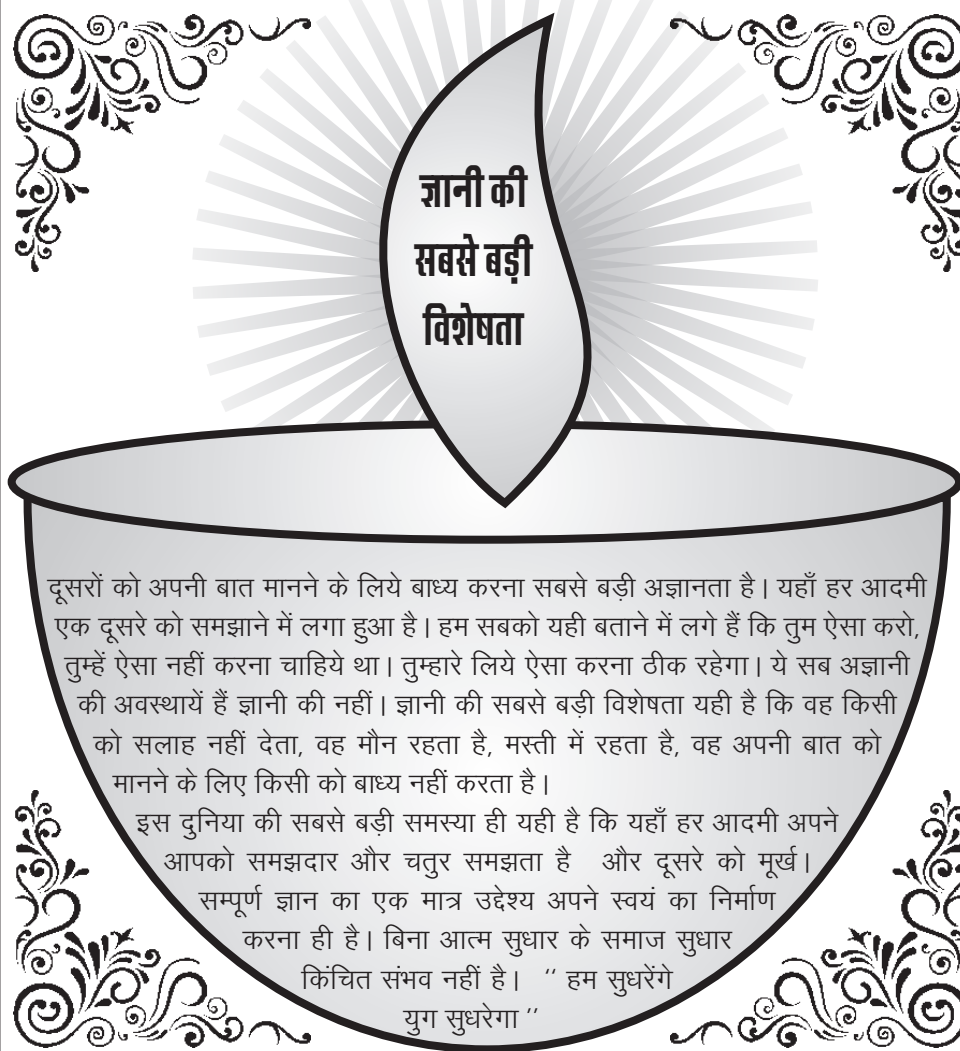
"योगी याज्ञवल्क्य" नामक ग्रंथ में गायत्री की अक्षरों का विवरण इस तरह लिखा है-

कर्मन्दिन्द्रियाणि पंचौव पंच बुद्धीन्द्रियाणि च ।
पंच पंचेन्द्रियार्थश्च भूतानाम् चौव पंचकम् ।।
मनोबुद्धिस्तथात्याच अत्यक्तं च यदुत्तमम् ।
चतुर्विंशत्यथैतानि गायत्र्या अक्षराणि तु,
प्रणवं पुरुषं बिद्धि संव्वगं पंचविंशकम् ।।

अर्थात्-(1) पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (2)पाँच कर्मेन्द्रियाँ (3) पाँच तत्त्व (4) पाँच तन्मात्राएँ। शब्द, रूप, रस, गंध, स्पर्श। यह बीस हुए। इनके अतिरिक्त अन्तःकरणचतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) यह चौबीस हो गये। परमात्म पुरुष इन सबसे ऊपर पच्चीसवाँ है।

ताकि मन पर बुराई रूपी मैल न टिक पाए

स्वामी रामकृष्ण परम हंस का यह नियम था कि वह नित्य अपने लोटे को माँजा करते थे। उनके एक शिष्य के मन में विचार आया कि स्वामी जी नित्य ही लोटा माँजते हैं, इसमें कुछ न कुछ रहस्य जरूर है। एक दिन उसने उनसे पूछ ही लिया। तब रामकृष्ण परमहंस बोले -"बेटे! यह लोटा नित्य माँजने पर भी गंदा हो जाता है, यही दशा अन्तर्मन की भी है। जब मन पर नित्य ही कुसंस्कार का प्रभाव पड़ता है, तब वह भी इस लोटे की तरह मैला हो जाता है। इसलिए हमें सद्संस्कारों से अपने अंतर्मन को भी माँजना चाहिए, ताकि मन पर बुराई रूपी मैल न टिक पाए।"



ईमानदारी और सत्कर्म की महत्ता

एक राजा सदैव प्रश्न को लेकर बैचैन रहता था कि सच्चा ज्ञान क्या है? उसने इस विषय को लेकर शास्त्रार्थ आयोजित किए, अनेक विचार गोष्ठियों का आयोजन किया, लेकिन कोई उसे सार रूप में सच्चे ज्ञान की सही परिभाषा नहीं दे पाया। एक दिन राजा अपने सिपाहियों के साथ वन की ओर निकल पड़ा, जहाँ एक ऋषि के विषय में पूछा। एक वृद्ध को देखकर उनसे ऋषि के विषय में पूछा। उस वृद्ध ने कहा - "आप जिसके विषय में पूछ रहे हैं, वह मैं ही हूँ।"

यह सुनकर राजा ने उन्हें प्रणाम किया और अपनी तीन समस्याएँ उनके सामने रखीं। पहली, सबसे अच्छा मित्र कौन है? दूसरी, सबसे अच्छा समय कौन - सा है? तीसरी अच्छा काम कौन - सा है। राजा के प्रश्नों का ऋषि ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि राजा से अपने कार्य में मदद करने को कहा। जब राजा बीज बोने में उनकी मदद करने लगा, तभी एक घायल व्यक्ति के करहाने की आवाज सुनाई पड़ी। यह व्यक्ति राजा के चरणों में गिरकर क्षमा मांगने लगा। तब ऋषि ने बताया - "राजन् यह व्यक्ति आपको मारने आया था, लेकिन सिपाहियों ने इसे घायल कर दिया।" इसके बाद राजा ने अपने प्रश्नों का उत्तर मांगा तो ऋषि बोले - "राजन् आपके प्रश्नों का उत्तर मिल तो गया। सबसे अच्छा मित्र आपके सामने खड़ा है, जो आपसे क्षमायाचना कर रहा है। सबसे अच्छा समय वर्तमान है और सबसे अच्छा कर्म उपस्थित कर्म है।"

कथा का सार यही है कि हम जहाँ भी रहे, जैसे भी रहें, बस स्वयं के प्रति ईमानदार रहें और सत्कर्मों को निष्ठापूर्वक करते रहें। यदि हम ऐसा करते हैं तो शत्रुभाव रखने वाले भी हमारे मित्र हो जाएंगे और समय हमारे लिए अनुकूल होगा। यह सच्चा ज्ञान है।

जीने के सूत्र

- किसी भी कार्य को करते समय असुरक्षा या नकारात्मक मन में न लाएं, आप जब कार्य कर रहे हों तो यह सोचकर करें कि मुझे बेहतर करना ही है।
- अगर आपके मन में दृढ़ इच्छा हो और सच की शक्ति हो तो आप जिन्दगी के हर क्षेत्र में सफलता हासिल कर सकते हैं।
- अपने खाली समय को एकान्त में बिताना चाहिए ताकि आप अपने बारे में सोचें एवं सही आंकलन कर सकें।
- सफलता के लिए उदारता और सहनशीलता अनिवार्य है, बात-बात में उत्तेजित होने से सफलता दूर ही होती है।
- सफलता पेड़ पर लगा हुआ फल नहीं है जिससे तोड़कर प्राप्त किया जा सके, बल्कि सफलता तो एक सतत प्रक्रिया है जो निरन्तर प्रयास से प्राप्त हो सकती है।

शिक्षा के साथ शिष्टाचार भी महत्वपूर्ण

इन दिनों हम बच्चों की शिक्षा पर बहुत जोर दे रहे हैं, लेकिन सवाल उठता है कि क्या केवल शिक्षा से काम चल जाएगा? शिक्षा की एक बहन है शिष्टाचार। देखा जा रहा है कि अधिकांश बच्चे शिक्षा लेकर तो घर लौटते हैं पर दूसरी बहन शिष्टाचार घर में प्रवेश नहीं कर पाती। यही वजह है कि बच्चे घर में जिद, अमर्यादित व्यवहार या कभी-कभी बदतमीजी की हद पार कर जाते हैं। शिष्टाचार का प्रयास परिवार के भीतर से ही करना होगा। परिवार के वरिष्ठ सदस्य जो माता-पिता, बड़े भाई-बहन भी हो सकते हैं, सभी मिलकर संयुक्त रूप से कृतज्ञता और शिष्टाचार का मिला-जुला आचरण प्रस्तुत करें, तब बच्चों के जीवन में दोनों बहनें ठीक ढंग से प्रवेश करेंगी छोटा-सा भी काम पूरा हो तो प्रशंसा अवश्य की जाए। घर में जो भी सदस्य जो काम कर सकता हो, उससे वह जरूर कराया जाए। इससे वह सम्मानित महसूस करता है। दूसरों के प्रति शिष्ट होने में मन बड़ी बाधा पहुंचाता है। मन सक्रिय हो, भरा-पूरा हो तो कभी भी सही काम नहीं करेगा। अशांत रखेगा। मन निष्क्रिय हो या अनुपस्थित हो तो अच्छे काम होंगे। इन दोनों के बीच एक कोरा मन भी है। जिसे रखकर कृतज्ञ होना, शिष्ट होना बड़ा आसान है, इसलिए घर के सभी सदस्य पूजा-पाठ के साथ कुछ समय योग को, जरूर दें।

मानव मन के बोल

वसुधैव कुटुम्बकम् के भावों के साथ



गतांक से आगे.....

भाभीजी सिलाई कर सकती हैं। अच्छे-अच्छे टुकड़े निकलते हैं, हम खरीदेंगे और सिलाई करने में काम आ जायेगा। वहाँ बहुत बड़ी कम्बल की फैक्ट्री भी, वहाँ से सामान लाये थे, देवास से ही गया था। बहुत अच्छा नगर है, देवास अर्थात् देवों का वास। महाकालेश्वर भगवान की जय हो। पूरी श्रद्धा रखिए, पूरा विश्वास रखिए, आस्था में विकल्प मत कीजिए। अपने परिवार जैसा हितैषी कोई नहीं मिलेगा। परिवार के माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, भाई-बहिन, इनसे ज्यादा हित कौन चाहेगा-बाबूड़ा?

तो हम दूसरे दिन फिर हॉस्पिटल सिरोंही पहुँचे, राम-राम बाबूजी। हम सब एक ही परमात्मा की सन्तानें हैं, यह परम सत्य है। इस परम सत्य को हम भूल गये हैं, परम धर्म को भूल गये, शायद मानव धर्म को भूल गये हैं। क्या कहें? उन्होंने दो-तीन बार देखा, बाबूजी आपको पहचाना नहीं। ठीक कहा उन्होंने, पूर्व जन्म के रिश्ते थे। मैंने कहा-बाबूजी, आप भगवान के बेटे हो, मैं भी भगवान का बेटा हूँ, तो आपका भाई हुआ, आपका भाई मिलने आया हूँ। हाँ सा. यही बात है। जी ये बात है, भगवान के बेटे हैं-बाबूजी आओ बैठो। मैंने पूछा, कहाँ से आये हो? क्या तकलीफ हुई है? बाबूजी आठ दिन पहले टायफाइड हो गया, टाइफाइड बहुत बिगड़ गया। परिवार ने सोचा, ये जिन्दा नहीं बचेंगे। मेरे मामा जी मुझे लेके आये। धन्यवाद है मामाजी-आपको। भान्जे का कितना अच्छा ख्याल रखा आपने, फिर उनको मैंने मौसमी दी, बहुत राजी हो गये। अच्छा-अच्छा आप तो फल लाये हो। उनके पास ही एक बच्चा लेटा हुआ था वार्ड में, मैंने कहा बेटा बिसकिट ले। भगवान की परम कृपा, उनको लगा कि सिरोंही शहर में कोई मेरे से मिलने आया है, आनन्द की लहरें लेके आया है, आनन्द की लहरें। ऐसा रहा, मैंने कहा-बाबूजी, कल मैं फिर आऊँगा।

क्रमशः अगले अंक में ...

सम्पादकीय

मनुष्य बहुत कुछ कामनाएँ रखता है। यह चाहिए, वह चाहिए पर जो कुछ वह चाहता है, उसमें से कितना पूरा होता है? शायद नहीं के बराबर। जो चाहें सो पाएँ वाली बात इसी कारण आश्चर्यजनक लग सकती है। भला यह कैसे संभव है? हम जो चाहें सो पाएँ-कैसे हो सकता है? अधिकांश इस पर विश्वास ही न करें, पर दुनिया के एक नहीं लाखों दृष्टांत इस बात के प्रमाण हैं कि जो चाहा, सो पाया..... आखिर कैसे? कोई चमत्कार या जादू के बल पर नहीं, वरन् अपने अन्तःकरण की शक्ति के बल पर पाया। भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करने वाले लोगों को चिंतकों और मानव ज्ञान शास्त्रियों ने निकम्मा और मूर्ख माना है। भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं होती है। 'जब भाग्य होगा, अपने आप काम हो जाएगा' या अभी अवसर कहाँ आया है। अवसर आते ही सारा काम बन जाता है। इस तरह की भावनाएँ केवल अपनी असफलता पर परदा डालने की कोशिश है। इस तरह हम अपनी कमजोरियाँ छिपाते हैं। वास्तव में भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं है। यह केवल मन का वहम मात्र है। कोई भी कार्य करने का अवसर या भाग्य देखना निहायत बेतुकी बात है। जो कर्मयोगी हैं, वह कभी इसकी प्रतीक्षा नहीं करते। धन कुबेर रॉकफ़ैलर का कथन था, 'मैंने कभी भाग्य और अवसर की प्रतीक्षा नहीं की, जब भी काम की बात मन में आई, शुरु कर दिया। मैंने अपने जीवन में प्रत्येक क्षण को ही भाग्य और अवसर माना है।' अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करना अपनी सफलता को पीछे फेंक देना है। हो सकता है कि जब तक इतना समय निकल जाए कि आप करने पर भी न पा सकें। यदा-कदा भाग्य के फेर में भी मनुष्य अपने जीवन को दुःख से भर लेता है। अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा न कर आप अपना कार्य शुरु कर दें। दूसरों को देखें - लोग उनकी प्रशंसा करते हैं- 'कितना भाग्यशाली है अमुक-' 'अमुक का सितारा बड़ा बुलंद है' -पर क्या 'अमुक' के जीवन में झांकने की कोशिश की, कि 'अमुक' आज जिस शिखर पर है, उस तक पहुँचने के लिए 'अमुक' ने कितना कठोर परिश्रम किया है? अमुक ने क्या-क्या संकट नहीं बर्दाश्त किए? यह तो 'अमुक' का दिल जानता होगा कि वह कैसे उस स्थान तक आया है? दूसरों का सुख, वैभव देखकर आपको ईर्ष्या होती है, पर उस सुख को भोगने वाले दिलों से पूछिए कि कैसे पाया है यह सब?..... और अपने आपको बनाए रखने के लिए उनको अभी भी क्या-क्या करना पड़ रहा है? अतएव जब तक आप इस महत्व को नहीं जानेंगे और केवल 'अवसर', 'भाग्य' की राह देखते रहेंगे, तब तक आप कुछ नहीं कर सकते हैं।

सिंहस्थ महाकुंभ में अमृत बूँदों का महत्व

उदयपुर। समुद्र मंथन के समय निकले अमृत कुंभ से चार बूँदें छलक कर इस धरती पर गिरीं। जहाँ-जहाँ ये बूँदें गिरीं, वहीं पर प्रत्येक 12 वर्ष में पृथ्वी पर कुंभ मेला लगता है। कालों के काल महाकाल की पावन नगरी उज्जैन भी उन्हीं पवित्र स्थलों में से एक है, जहाँ आस्था और श्रद्धा ये का समागम होता है। संस्थान के जनक डॉ. कैलाश मानव ने कहा कि जिस प्रकार भगवान शिव ने विष पीकर इस सृष्टि की रक्षा की और देवताओं में अमृत बांटा, उसी बाबा इस नगरी में नारायण सेवा संस्थान के साधक भी दिव्यांगों के जीवन का कष्ट दूर करके, उन्हें स्वास्थ्य प्रदान कर रहे हैं। मौसम की बदमिजाजी और बदले तेवर के बावजूद भी अब तक शिविर में लगभग 50 से अधिक दिव्यांगों के ऑपरेशन हो चुके हैं। 100 से अधिक लोग प्रतिदिन फिजियोथेरेपी सेवाओं का लाभ उठा रहे हैं। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि खराब मौसम और निरंतर हो रही वर्षा के बावजूद भी सेवा और सत्संग कार्य निर्बाध गति से जारी हैं। कथा-प्रवचन की इसी कड़ी में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में पू. दीपा जी मिश्रा ने प्रातः कालीन वेला में कहा कि सत्संग में बैठने से आत्मज्ञान की ज्योति प्रकट होती है, जो हमें ईश्वर के निकट ले जाती है। पू. दयालु जी महाराज ने कहा कि महाकाल की पावन नगरी जहाँ लोग अपने जीवन को अमृत बनाने आए हैं, ऐसे अमृतमयी सिंहस्थ कुम्भ महापर्व में प्रत्येक मनुष्य को प्रभु श्रीराम का आचरण और चरित्र, आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए। मंच संचालन श्रीकृपा व्यास ने किया।



व्यवहार है जीवन का राजमार्ग

(मानव धर्म शृंखला का चतुर्थ (4) पुष्प)

गतांक से आगे....

नरतन सम नहीं कवनरु देही।

जीव चराचर जाचत तेही। (33)

ये मानव धर्म धन्य हो गया, जीवन धन्य हो गया। ये आचार्य कनकनन्दी जी महाराज, जैन धर्म के दिगम्बर मुनि महाराज, जिनकी वैज्ञानिक क्षमता है, वैज्ञानिक मुनिमहाराज हैं। उन्होंने जब उदयपुर के आयड़ में चातुर्मास किया था, तब मुझे पुरस्कृत किया था, बहुत सारा साहित्य अर्पण किया था और मैंने उनको दण्डवत् प्रणाम किया था। बोलिये आचार्य कनकनन्दी जी मुनिमहाराज की जय। दिल्ली से रामकुमार जी व उनकी पत्नी प्रेम लता जी पधारें हैं -

आपके पधारने से मानव जीवन सफल हो गया, आपने धर्म का अर्थ समझ लिया है महाराज।

प्रकट चारि पग धर्म के,

कलयुग एक प्रधान।

येन केन विधि दीने,

दान करे कल्याण।।(34)

भरी रहे अन्तर रस की गगरी

बन्द ना कर देना-कुलदागी का फन जीवन रेल... हम सुधरेगें...

ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमही धियो यो नः प्रचोदयात्।(35)

हे अयोध्या रा राजा, दशरथ जी रा लाला

माता कौशल्या रा, जाया म्हारो हैलो सुनु रघुनाथ जी

भरत शत्रुघ्न लखन लाल जी सेवा में तैय्यार जी चरण कमल में बैठिया रेवे पवन सुत हनुमान जी मर्यादा पुरषोत्तम थारी- जुग-जुग जपां जय कारा(36)

थने धणी खम्मा अनदाता

बोलिये नृसिंह भगवान की - जय।

बोलिये भक्त राज प्रहलाद की - जय।

मार्कण्डेय मुनिराज महाराज की - जय।

नृसिंह भगवान ने कहा - हे भक्तराज प्रहलाद, अपनी आत्म शक्ति को मजबूत बनाने से, हर क्षेत्र में सफलता मिलती है।

“बन्द न कर देना घर के दरवाजे,

ना मालूम कब कोई पाहुन घर आवे।

रिक्त ना कर देना अन्तर की रस गगरी,

ना मालूम कब कोई प्यासा स्वर आवे।”(37)

मार्कण्डेय ऋषि की कृपा जब मनुज जी पर हो गई, आपने देखा कितना - कितना कष्ट दिया कुलदागी ने? कभी उनके पुत्र का अपहरण कर दिया, प्रसाद में नशा मिलाकर खिला दिया, इतना धोखा दिया और सिरोही के हॉस्पिटल में भी रोगी लोगों के लिये नालायक ने षडयंत्र रच लिये। ऐसे कुलदागी ने बार-बार जब भी फन उठाया है, मनुज जी ने नृसिंह भगवान से प्रार्थना की है - पीर हरो प्रभु - पीर हरो। पीर हर ली और हमारे सरस्वती भक्तों के लिये जोरदार तालियाँ।

यूँ कई पड़यो पसर ने डाकी

अबे थारा कतरा टेशन बाकी।।

कठे अंगरखी, कठे पगरखी।

कठे पागड़ी नाकी।

यूँ कई पड़यो पसर ने डाकी।

अबे थारा कतरा टेशन बाकी।।(38)

धर्म का दूसरा बड़ा दुश्मन आलस्य, बस बैठिया है, पड़िया है, उद्यम भी नहीं करते, कर्म भी नहीं करते, कर्तव्य नहीं करते, वो डाकी हैं डाकी। मेवाड़ में डाकी कहते हैं डाका डालने वाले को, आपको उत्साह पर किसने डाका डाल दिया।

मुन्व्य कार्यकानी अधिकानी-कैलाश 'मानव'

मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,

जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा

मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल

अख्यक प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी

अंपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी

अंपादन अख्योगी-घनश्याम त्रिंठ नाठौड

बंजारे को अनुभव के बल पर मिली समृद्धि



एक बंजारा बैलों पर मिट्टी लादकर दिल्ली आ रहा था। रास्ते में पड़ने वाले गांवों में उसकी मुलतानी मिट्टी का आधा हिस्सा बिक गया। बोरे आधे खाली होने से बैलों की पीठ पर टिक नहीं पा रहे थे। तब बंजारे ने नौकरों से कहा, 'बोरों के एक तरफ बालू रेत भर लो। हम अभी राजस्थान की जमीन पर खड़े हैं।

यहां तो हर ओर रेत है।'

आगे चलते हुए इस काफिले को दिल्ली का व्यापारी मिला। उसने कहा, 'तुम लोग मूर्ख हो। बैलों को व्यर्थ ही कष्ट दे रहें हो। रेत फेंककर मिट्टी आधी-आधी कर बैलों पर रखो, कम भार होने से बैल तेज चलेंगे।' तब बंजारे ने व्यापारी से परिचय पूछा। उसने बताया,

'मुझे व्यापार में घाटा हुआ। अब पास में कुछ नहीं रहा, तो घर लौट रहा हूँ।' यह सुनते ही बंजारे ने एक असफल व्यक्ति की राय से चलने के स्थान पर अपने अनुभव को वरीयता दी। दिल्ली पहुंचकर उसने मुलतानी मिट्टी और रेत के अलग-अलग ढेर लगवाए और मिट्टी बेचनी शुरु कर दी। उसी समय बादशाह अस्वस्थ हुआ। वैद्य ने उसे रेत के टीले पर रहने की सलाह दी, क्योंकि रेत शरीर को निरोग कर देती है। बादशाह के एक करिंदे ने बंजारे को रेत लाते देखा था। उसने वही रेत खरीदने का सुझाव दिया। बादशाह के कारिंदों ने सारी रेत ऊँचे दामों में खरीद ली। बंजारा मालामाल हो गया। जीवन में सदैव अनुभव के आधार पर निर्णय लेना चाहिए, क्योंकि अनुभव की आँच में तपकर बुद्धि विवेक का रूप ग्रहण कर लेती है और विवेक उचित-अनुचित का दिशा बोध देता है।

पीठ दर्द सामान्य रोग नहीं

आज भागदौड़ की जिन्दगी में इंसान इतना बेहाल हुआ रहता है कि उसे अपने शरीर की सुध ही नहीं रहती।

वह कई खतरनाक रोगों को सामान्य समझकर खुद ही उनका इलाज करता रहता है। और निरंतर कार्यों में लीन रहता है मगर जब रोग हद से गुजर जाता है तो आखिर उसे चिकित्सक के पास जाना ही पड़ता है। अधिकतर महिलाएँ व पुरुष पीठदर्द के रोग से पीड़ित होते हैं। काम की अधिकता, परेशानी, तनाव आदि ऐसे कारण हैं जो इस रोग का बढ़ावा देते हैं।

पीठदर्द को दूर करने के लिए कुछ व्यायाम भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं मगर कोई भी व्यायाम करने से पहले चिकित्सक का परामर्श आवश्यक है वरना आपका पीठदर्द घटने की बजाय बढ़ सकता है। पीठ दर्द को कम करने के लिए निम्न बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है-

- भारी सामान उठाते समय उसे खींचने की बजाय धकेलना अधिक श्रेयस्कर है।
- लगातार बैठकर कार्य करने से भी पीठदर्द बढ़ सकता है अतः एक घंटे से अधिक बैठना पड़े तो बीच-बीच में उठ जाएं।
- बैठने के लिए पीठ वाली कुर्सी का ही इस्तेमाल करें।
- जहाँ तक हो सके, रूई की गद्दियों व बिस्तर का ही प्रयोग करें। फोम की गद्दियों से पीठदर्द बढ़ने की संभावना अधिक होती है।
- शरीर का भार संतुलित रखें। शरीर के अधिक वजन से रीढ़ की हड्डी पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- कोई चीज उठाने के लिए नीचे की ओर अधिक न झुके, न ही पीठ के बल घूमें।
- तनावग्रस्त न रहें।
- पीठदर्द की दवाएँ लेने से पहले किसी अच्छे चिकित्सक की सलाह लेना आवश्यक है।
- योग्य डाक्टर के परामर्श से किया गया व्यायाम पीठदर्द से मुक्ति का सबसे अच्छा उपाय है।
- कई लोगों के ख्याल में जमीन पर सोने से पीठदर्द ठीक हो सकता है मगर यह सरासर गलत सोच है। यह पीठदर्द को खुला निमंत्रण है।
- कम्प्यूटर पर कार्य करते समय गर्दन को आगे या पीछे की ओर न झुकाएँ। इससे पीठ पर तनाव आ जायेगा।

संवा-आमंत्रण

पुरातन, वैदिक एवं शाश्वत नगरी- महाकाल की पावन धरा पर **अध्यात्म**

सिंहस्थ कुम्भ महापर्व-2016

30 दिवसीय भक्ति-शक्ति एवं सेवा-अध्यात्म पर्व

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म (ट्रस्ट), उदयपुर

सहायताार्थ

शिव विवाह कथा

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

कमला देवी
सहसंस्थापिका

प्रशान्त अग्रवाल 'सेवक'
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

वन्दना अग्रवाल
निदेशक

कथा व्यास
पुण्य मिलीत चतुर्देवी जी

दिनांक- 19 से 21 मई, 2016

समय- सां. 7.00 बजे से रात्रि 10.30 बजे तक

पर्व स्थल- प्लॉट नं. 83/17-22, आगर रोड़, उन्हेल नाका, खिलचौपुर,
सेक्टर-5, मंगलनाथ, उज्जैन (म.प्र.)

संपर्क सूत्र - 0294-6622222, 3990000, 96494-99999 Fax : 0294-2464445
Web: www.nssskumbh.org, E-mail: info@narayanseva.org
www.narayanseva.org

नियेदक

कैलाश 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन

जगदीश आर्य,
ट्रस्टी एवं निदेशक

कमला देवी
सहसंस्थापिका

देवेन्द्र चौबीसा,
ट्रस्टी एवं निदेशक

प्रशान्त अग्रवाल 'सेवक'
अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष

वन्दना अग्रवाल
निदेशक

भक्ति एवं सेवा के महापर्व में एक आहुति आपकी भी, कृपया सपरिवार पधारें।